Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23044
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23044

ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

CONFERENCE PAPER

कर्नाटक संगीत पद्धति की राग चारूकेशी का उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में प्रयोग

डॉ. हर्षित वैयर

1. सहायक आचार्य संगीत विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय]जयपुर (राज.).

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Abstract

संगीत एक ऐसी विशिष्ट कला है]जो जन-जन को सम्मोहित करने में सक्षम है। संगीत चाहे शास्त्रीय हो]या लोक अथवा फिल्म संगीत]यह मानव हृदय का सूक्ष्म स्पंदनहै। परमात्मा से जुडने का महत्त्वपूर्ण माध्यम है। शास्त्रीय संगीत के दृष्टिकोण से भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो मुख्य पद्धतियाँ हैं। उत्तर भारतीय संगीत एवं दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति (कर्नाटक संगीत पद्धति)। दोनों ही अपनी-अपनी विशेषताएँ लिए हुए हैं। जहाँ कर्नाटक संगीत पद्धति आज भी अपने मूल रूप में विद्यमान है और उसी मूल रूप में गाया-बजाया जा रहा हैं वहींउत्तर भारतीय संगीत विभिनन अक्रान्ताओं के आगमन से प्रभावित हो]अपने मूल रूप से हट कर समय-समय पर परिवर्तनशील रहा है। यद्यपि दोनों पद्धतियों में 12 स्वरों का समान रूप से प्रयोग होता हैं। किन्तु गायन-वादन पद्धति में इनके प्रयोग में भिन्नता है।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Introduction:-

दक्षिण भारतीय संगीत की कुछ रागों का प्रयोग उत्तर भारत में हुआ है। और वह रागें उत्तर भारत में सर्वाधिक प्रचलित रागों के रूप में उभरकर सामने आयी है। इन रागों का प्रयोग शास्त्रीय]सुगम एवं फिल्म संगीत में काफी हुआ है। जैसे राग चारूकशी]किरवानी]हंसध्वनि]आभोगी] कलावति इत्यादि। इन्हीं रागों में से एक राग है]चारूकेशी। यह राग उत्तर भारत में बहुत प्रचलन में है। यह अत्यन्त मधुर एवं कर्णप्रिय राग है। सम्पूर्ण जातिका राग होने के साथ इसमें धैवत और निषाद स्वर विकृत (कोमल) प्रयोग होते हैं। उत्तरांग प्रधान राग होने के साथ बिना किसी रोक-टोक के इसे गाया बजाया जाता रहा है। कर्नाटक संगीत के 72 मेलकर्ता रागम् प्रणाली में 26वाँ मेलकर्ता रागम् है। इस राग को कर्नाटक संगीत पद्धति में किरनावली के नाम से भी जाना जाता है। इसका गायन समय दिन का दूसरा प्रहर माना गया है। मृत्युस्वामी ने इसे तरंगिनी की संज्ञा दी है। इस राग के पूर्वांग में शंकराभरण (बिलावल) और उत्तरांग में हनुमत तोड़ी (भैरवी) रागों का स्वरूप देखने को मिलता है। इसके साथ ही नट अंग (सा]रे]ग]म) भैरव अंग (ग म ध प)]भैरवी अंग (म निध प) एवं दरबारी (नी सा रे साध़) का भी सुन्दर स्वरूप मिलता है।

Corresponding Author:- डॉ. हर्षित वैयर

Address:- सहायक आचार्य संगीत विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय]जयपुर (राज.).

इन सभी अंगों के समावेश से राग चारूकेशी का मधुर एवं स्वतंत्र अस्तित्व देखने को मिलता है। यह राग अत्यन्त मधुर एवं कर्णप्रिय होने के कारण उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीतज्ञों द्वारा अत्यधिक गाया]बजाया गया। और इसकी लोकप्रियता में वृद्धि होती रही शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ फिल्म संगीत में भी इस राग का काफी प्रचार एवं प्रयोग हुआ है। प्रख्यात सितारवादक भारतरत्न पं. रवि शंकर को इस राग को उत्तर भारतीय संगीत में मुख्य रूप से प्रचलन में लाने का श्रेय जाता है। साथ ही उस्ताद अमीर खाँ ने भी राग-चारूकेशी की कई गायन की बंदिशे निर्माण की एवं इसके प्रस्तुतीकरण से इसे काफी लोकप्रिय बना दिया। पं. जसराज]विदुषि प्रभा आत्रे]बेगम परवीन सुल्ताना]पं. अजय चक्रवर्ती , विदुषि वीणा सहस्त्रबुद्धे ,अश्विनी भिंडे एवं उस्ताद राशिद खान जेसे अनेक सुप्रसिद्ध कलाकरों ने इस राग को अपनी प्रस्तुती से जन-मानस के पटल पर अंकित कर दिया है।

शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ फिल्म संगीत में भी कई जाने-माने संगीत निर्देशकों]ने अनेक सुप्रसिद्ध गीतों में इस राग का प्रयोग किया है। राग चारूकेशी पर आधारित कुछ फिल्मी गीत ,उनके गायक-गायिका,फिल्मसंगीत निर्देशकों के बारे में संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः-

(1) गीत- चलो सजना जहाँ तक घटा चले
फिल्म- मेरे हमदम मेरे दोस्त-1968
संगीत - लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल
गायिका- लता मंगेशकर

(2) गीत- श्याम तेरी बंशी
फिल्म- गीत गाता चल-1975
संगीत - रवीन्द्र जैन
गायक- आरती मुखर्जी
गायिका- जसपाल सिंह

(3) गीत- मेघा रे मेघा रे
फिल्म- प्यासा सावन-1981
संगीत - लक्ष्मीकान्त-प्यारेलाल
गायक- सुरेश वाडेकर
गायिका- लता मंगेशकर

(4) गीत- तेरी उम्मीद तेरा इंतजार
फिल्म- दिवाना- 1992
संगीत - नदीम-श्रवण
गायक- कुमार सानू
गायिका- अल्का याग्निक

(5) गीत- एक तू जो मिला] सारी दुनिया मिली
फिल्म- हिमालय की गोद-1995
संगीत - कल्याण जी-आनंद जी
गायिका- लता मंगेशकर

(6) गीत- बेदर्दी बालमा तुझको
फिल्म- आरजू-1995
संगीत - शंकर-जयकिशन
गायिका- लता मंगेशकर

(7) गीत- कुछ मेरे दिल ने कहा
फिल्म- तेरे मेरे सपने- 1996
संगीत - विजू शाह
गायक- हरीहरण
गायिका- साधना सरगम

संदर्भ ग्रंथ सूचीः-

1. डॉ. विमल (हिन्दी चित्रपट एवं संगीत का इतिहास) संजय प्रकाशन दिल्ली
2. Ragas in carnatic Music – D.S. Bhagyalaxmi
3. श्री कृष्णनारायण रातां जनकर-अभिनव गीत मंजरी भाग-2
4. बी-सुब्बाराव-राग निधि- भाग-1(1980)
5. Dr. P.T. Chelladwrai- The Spelendous of South Indian Music (1991)
6. A Ragas Journey- The charm of charukeshi by charulatamani Feb.3 (2012)